7

एल्फ्रेड मार्शल

[ALFRED MARSHALL]

एल्फ्रेड मार्शल : जीवन परिचय

(ALFRED MARSHALL : LIFE HISTORY)

मार्शल का जन्म 26 जुलाई, 1842 को क्लैपहैम (Clapham) लन्दन में हुआ था। इनके पिता विलियम मार्शल साधारण परिवार के थे और बैंक ऑफ इंगलैण्ड के खजान्ची थे। मार्शल ने दर्शन, नीतिशास्त्र तथा गणित की उच्च शिक्षा पाई थी। 19 वर्ष की आयु में इन्होंने सेंट जॉस कॉलेज, कैम्ब्रिज में दाखिला लिया और इसी कॉलेज से गणित लेकर स्नातक की उपाधि प्राप्त की। यहां इनका सम्पर्क सिजविक (Sidgwick), एफ. डी. मॉरिस (F. D. Maurice) तथा डब्लू. के. क्लिफोर्ड (W. K. Clifford) जैसे विद्वानों से हुआ। खास तौर से सिजविक का उनके ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा और मार्शल ने उनके सान्निध्य में कांट, हीगेल, मिल तथा बेंथम का गम्भीर अध्ययन किया। सन् 1867 में मार्शल ने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और शीघ्र ही उस समय के सभी अर्थशास्त्रियों के ग्रन्थों से वे अवगत हो गये।

सन् 1867 से 1881 तक वे यूनीवर्सिटी कालेज ब्रिस्टल के प्रिंसिपल रहे, सन् 1885 से 1908 तक वे वहां के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के अध्यक्ष रहे और सन् 1908 से अपनी मृत्यु पर्यन्त 1924 तक वे वहां के शोध विभाग के संचालक रहे, अर्थात् उनके कार्य का क्षेत्र कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ही रहा। उन्होंने 'Cambridge School of Economics' प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त Royal Economic Society एवं Economic Journal भी स्थापित किये। मार्शल ने बहुत लिखा है, परन्तु उनकी प्रधान कृतियां चार मानी जाती हैं, जो कि निम्न हैं—(1) *Economics of Industry*, (1879); (2) *Principles of Economics* (1890); (3) *Industry and Trade*, (1919); (4) *Money, Credit and Commerce*, (1923), इनमें **'सिद्धान्त'** (*Principles of Economics*) सबसे प्रधान ग्रन्थ है। मार्शल ने इस ग्रन्थ में कई बार संशोधन किये। सन् 1920 में इसका आठवां संस्करण प्रकाशित हुआ था जो कि उनका प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है।

मार्शल पर प्रभाव

मार्शल पर विभिन्न विचारकों का प्रभाव पड़ा। उन्होंने दर्शन, नीतिशास्त्र, गणित, राजनीति आदि का गम्भीर अध्ययन किया था जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके अर्थशास्त्र पर पड़ा। खास तौर से नीतिशास्त्र और गणित उनका आधार ही है। वे स्वयं एक दयालु तथा साधु पुरुष थे और यह संस्कार उनके धार्मिक परिवार से उन्हें मिला था। दार्शनिकों में वे कांट (Immanuel Kant) से सबसे अधिक प्रभावित थे। इनके अतिरिक्त हीगेल, बेंथम तथा मिल ने उन्हें प्रभावित किया था। उन पर डार्विन एवं टॉयनबी ने भी असर डाला। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का गहन अध्ययन किया था और तत्कालीन एवं प्राचीन समाजवादी विचारों, ऐतिहासिक तथा गणित सम्प्रदाय आदि से भी वे अवगत थे।

मार्शल का मौलिक योगदान

मार्शल का प्रधान ग्रन्थ '**अर्थशास्त्र के सिद्धान्त**' 6 भागों में विभक्त है। प्रथम दो खण्ड परिमाण और प्रारम्भिक भूमिका के विषय में हैं। तीसरे खण्ड में आवश्यकता का विवेचन है। चौथा खण्ड पूर्ति से सम्बन्धित है। पांचवें भाग में मूल्य के सिद्धान्त का और छठवें में वितरण का वर्णन किया गया है। मार्शल के प्रधान योगदान को संक्षेप में आगे समझाया गया है।

Scanned by PDF Scanner

(I) अर्थशास्त्र की परिभाषा एवं क्षेत्र

मार्शल ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। उन्होंने लिखा है, "अर्थशास्त्र मनुष्य के सामान्य जीवन का अध्ययन है। वह व्यक्ति और समाज के कार्यों के उस भाग का अध्ययन करता है जो भौतिक कल्याण के साधनों की प्राप्ति एवं प्रयोग से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हैं।" उनके अनुसार अर्थशास्त्र धन का नहीं, मुख्यतः मनुष्य का अध्ययन है। अर्थशास्त्र मनुष्य की धन सम्बन्धी क्रियाओं की जांच करता है। उन्होंने लिखा है, "एक तरफ तो यह धन का अध्ययन है और दूसरी एवं अधिक महत्वपूर्ण पक्ष में यह मनुष्य का अध्ययन है।"

मार्शल ने अर्थशास्त्र को एक विशुद्ध विज्ञान (Positive Science) तो माना ही, साथ ही उसे एक कला (Art) एवं नैतिक विज्ञान (Normative Science) की मान्यता भी दी।

मार्शल की परिभाषा एवं क्षेत्र के विवेचन की बाद में बहुत आलोचना भी हुई। कहा गया कि अर्थशास्त्र को इस प्रकार असंतृप्त विभागों (Watertight Compartments) में नहीं बांटा जा सकता, अर्थात् मनुष्य का कोई कार्य न पूर्णतः आर्थिक होता है और न पूर्णतः अनार्थिक ही। यह भी कहा गया कि विज्ञान का मूल उद्देश्य ज्ञान का उद्घाटन करना है मानव कल्याण अर्थशास्त्र का उद्देश्य नहीं, परिणाम है इत्यादि।

(II) अर्थशास्त्र की अध्ययन प्रणाली

मार्शल ने अर्थशास्त्र के अध्ययन की प्रणालियां भी स्थिर कीं। उनके अनुसार आगमन (Induction) तथा निगमन (Deduction) दोनों ही पद्धतियां अर्थशास्त्र के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने लिखा है कि "आगमन और निगमन दोनों ही अर्थशास्त्र के लिए वैसे ही आवश्यक हैं जैसे कि चलने के लिए दायें और बायें दोनों ही पैरों की आवश्यकता होती है।"

उन्होंने दोनों प्रणालियों का क्षेत्र निर्धारित किया, परन्तु यह भी बताया कि जहां तक सम्भव हो तथ्यों के आधार पर सिद्धान्त स्थिर होने चाहिए, अर्थात् आगमन पद्धति को अपनाना चाहिए, किन्तु जहां ऐसा सम्भव न हो, वहां निगमन आवश्यक हो जाता है। मार्शल ने लिखा है कि "ऐसी कोई प्रणाली नहीं है जिसे अर्थशास्त्र की विशिष्ट प्रणाली कहा जा सके। प्रत्येक प्रणाली को अपने स्थान पर उपयोगी बनाने का प्रयास होना चाहिए।"

(III) अर्थशास्त्र का पुनर्गठन

मार्शल का सबसे महत्वपूर्ण कार्य अर्थशास्त्र के बिखरे विचारों को संशोधित करके एक व्यवस्था का रूप देना था। मार्शल ने सभी प्रचलित सिद्धान्तों को फिर से संशोधित किया है और कई स्थानों पर अपना नितान्त मौलिक विचार भी दिया है। आधुनिक अर्थशास्त्र के अधिकांश सिद्धान्त मार्शल के बुद्धि वैभव से सम्पन्न हुए हैं।

(IV) अर्थशास्त्र के प्राकृतिक नियम

मार्शल ने अर्थशास्त्र को मूलतः एक शुद्ध विज्ञान (Positive Science) माना और उसके नियमों को **प्राकृतिक नियम** (Natural laws) कहा, परन्तु साथ ही उन्होंने यह भी घोषित किया कि अर्थशास्त्र के नियम अन्य प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों की अपेक्षा कम निश्चित होते हैं। मार्शल के शब्दों में, "अर्थशास्त्र के नियमों की तुलना ज्वारभाटा के नियमों से की जानी चाहिए न कि आकर्षण शक्ति के सरल और निश्चित नियम से। कारण यह है कि मनुष्य के कार्य इतने भिन्न और अनिश्चित होते हैं कि प्रवृत्तियों की श्रेष्ठतम व्याख्याएं, जो मानवीय विज्ञान में की जा सकती हैं, सदैव दोषपूर्ण एवं गलत होती हैं।"

(V) उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त

उपभोक्ता की बचत या आधिक्य का विचार यद्यपि मार्शल से पूर्व भी ज्ञात था और उसे उपभोक्ता लगान (Consumer's Rent) के नाम से जाना जाता था, परन्तु मार्शल ने उसे एक व्यवस्थित सिद्धान्त का रूप दिया और अब वह मार्शल के नाम से ही संयुक्त है। मार्शल ने उपभोक्ता आधिक्य की निम्न शब्दों में परिभाषा दी है: "वस्तु के लिए जो मूल्य उपभोक्ता वास्तव में देता है उस पर उस मूल्य का, जोकि वह वस्तु का अभाव सहने के बजाय देने को तैयार हो जाता है, आधिक्य ही इस अतिरिक्त सन्तोष का माप है। इसे हम उपभोक्ता की बचत कह सकते हैं।"

Scanned by PDF Scanner

(VI) मांग की लोच

अपने सिद्धान्त नामक ग्रन्थ के तृतीय खण्ड में मार्शल ने मांग की लोच (Elasticity of Demand) का विश्लेषण किया है। मूल्य में परिवर्तन होने से मांग की मात्रा में परिवर्तन की जो गति होती है वही मांग की लोच है। उन्होंने मांग की लोच के निम्न पांच भेद बताये हैं :

(1) **पूर्णतः लोचशील** (Absolutely Elastic), जब मूल्य में बिना परिवर्तन हुए मांग में अनन्त परिवर्तन हो जाय।

(2) **अत्यन्त लोचशील** (Highly Elastic), जब मूल्य में थोड़ा परिवर्तन होने पर भी मांग में भारी परिवर्तन होता है।

(3) **लोचशील** (Elastic), जब मूल्य और मांग में एक ही अनुपात में परिवर्तन हो।

(4) **कम लोचशील** (Less Elastic), जब मूल्य में अधिक परिवर्तन होने पर भी मांग में कम परिवर्तन हो।

(5) **लोचहीन मांग** (Inelastic), जब मांग में परिवर्तन न हो। मार्शल ने लोच को नापने की प्रणाली भी बताई जो कि '**व्यय पद्धति**' (Outlay Method) कहलाती है।

(VII) प्रतिनिधि फर्म का विचार

मार्शल ने प्रतिनिधि फर्म का विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि वस्तु का मूल्य प्रतिनिधि फर्म (Representative Firm) की लागत के बराबर होता है। मार्शल ने इसकी परिभाषा निम्न शब्दों में दी है : "प्रतिनिधि फर्म ऐसी फर्म होती है, जिसका पर्याप्त समय से अस्तित्व हो और जिसे पर्याप्त सफलता मिल चुकी हो, जिसका प्रबन्ध सामान्य योग्यता से हो और जिसे उन आन्तरिक एवं बाह्य किफायतों का सामान्य लाभ मिल रहा हो जो कि बड़े पैमाने पर उत्पादन होने पर प्राप्त होती हैं और जिसमें वस्तु की किस्म, वस्तु की बिक्री की व्यवस्था और अन्य आर्थिक बातों का ध्यान रखा जाता हो।"

मार्शल के अनुसार प्रतिनिधि फर्म एक औसत फर्म होती है। वह न घट रही हो और न बढ़ रही हो, उसे न साधारण लाभ हो और न असाधारण हानि। तात्पर्य यह है कि वह फर्म एक सन्तुलन अथवा साम्य की स्थिति में हो। मार्शल ने लिखा है कि "फर्म घटती-बढ़ती रहती हैं, परन्तु प्रतिनिधि फर्म सदैव लगभग एक ही आकार की रहती है जैसे कि किसी नवीन जंगल में प्रतिनिधि पेड़ एक ही आकार का रहता है।"

उन्होंने समझाया है कि जिस प्रकार जंगल में सब प्रकार के पेड़ होते हैं—कुछ नये तथा कुछ पुराने, परन्तु कुछ वृक्ष ऐसे भी होते हैं जो औसत होते हैं। उसी प्रकार प्रतिनिधि फर्म एक औसत फर्म होती है।

(VIII) मूल्य निर्धारण सम्बन्धी विचार (कीमत निर्धारण में समय तत्व की भूमिका)

मार्शल ने मूल्य निर्धारण की समस्या को अर्थशास्त्र को समस्या माना है। उसने इस समस्या को मांग एवं पूर्ति की शक्तियों के बीच साम्य की समस्या स्वीकार किया है।

यदि दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मार्शल के विचारानुसार मूल्य का निर्धारण मांग और पूर्ति के साम्य (Equilibrium) द्वारा होता है। अपने मूल्य सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते समय मार्शल ने बाजार (Market) का भी अध्ययन किया है एवं उसे दैनिक बाजार (Very short Period Market) अल्पकालीन बाजार (Short Period Market) दीर्घ कालीन बाजार (Long Period Market) में विभाजित किया है। बाजार के अध्ययन के साथ-ही-साथ मार्शल ने परम्परावादी और आस्ट्रियन सम्प्रदाय के विचारों को भी ग्रहण किया है। परम्परावादी विचारकों का मत था कि किसी वस्तु का मूल्य उसकी उत्पादन लागत द्वारा निर्धारित होता है। दूसरे शब्दों में उनके विचारानुसार मूल्य का निर्धारण पूर्ति पक्ष पर आधारित होता है। इसी प्रकार जेवन्स (Jevons) और अन्य विषयगत शाखा के विचारकों ने मूल्य का निर्धारण उपयोगिता (utility) के आधार पर माना है।

जहां तक मांग पक्ष (Demand side) का प्रश्न है मार्शल ने अपने विचारों में आस्ट्रियन सम्प्रदाय (Austrian School) के द्वारा प्रतिपादित विचारों का समावेश किया है। यहां पर मार्शल भी हमें उन्हीं विचारकों की भांति ही यही कहते दिखाई पड़ते हैं कि व्यक्ति किसी वस्तु की मांग वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता के आधार पर ही करता है।

अर्थात् किसी व्यक्ति का, जो कि किसी वस्तु को खरीद रहा है, मांग-मूल्य (Demand price) उसके लिए खरीदी जाने वाली वस्तु की सीमान्त उपयोगिता (Marginal utility) तथा उस वस्तु के खरीदने के लिए दी जाने वाली राशि की सीमान्त उपयोगिता का साम्य (Equilibrium) है।

Scanned by PDF Scanner

दूसरी ओर पूर्ति पक्ष (Supply side) में मार्शल ने एडम स्मिथ, रिकार्डो आदि परम्परावादियों के सिद्धान्त को ही अपनाया है। यहां मार्शल परम्परावादियों के द्वारा प्रतिपादित उत्पादन-लागत-सिद्धान्त (Cost of Production Theory) को मान्यता प्रदान करते दिखाई पड़ते हैं।

कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति किसी वस्तु की पूर्ति उसके उत्पादन-लागत व्यय (Cost of Production) के अनुसार करता है। इस प्रकार किसी वस्तु का पूर्ति मूल्य (Supply price) उस वस्तु के उत्पादन लागत व्यय और उस वस्तु के उपलक्ष्य में प्राप्त होने वाली धन की राशि की सीमान्त उपयोगिता पर ही निर्धारित होता है।

मांग और पूति पर विचार करने के उपरान्त मार्शल ने बताया कि **वस्तु का मूल्य मांग-मूल्यों और पूर्ति-मूल्यों के साम्य बिन्दु पर निश्चित होता है।** अपनी इस बात के स्पष्टीकरण के लिए उसने ग्राफ की सहायता ली है। उसने स्पष्ट किया कि जिस बिन्दु पर मांग और पूर्ति की रेखाएं एक-दूसरे को काटेगी वहीं पर साम्य (Equilibrium) बिन्दु होगा। इस स्थिति पर वस्तु की **सीमान्त मांग मूल्य** (Marginal Demand Price) और **सीमान्त पूर्ति मूल्य** (Marginal Supply Price) समान होते हैं।

मार्शल ने मांग और पूर्ति के साम्य बिन्दु का निर्देश करते हुए बताया है कि इस **निर्धारण में यह बताना अत्यन्त दुस्तर कार्य है कि मांग और पूर्ति में से किसका महत्व अधिक है। कैंची के फसलों की भांति ही दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और किसी एक की भी अनुपस्थिति में मूल्य निर्धारण सम्भव नहीं है।**

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि मार्शल ने मांग और पूर्ति दोनों पक्षों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

मार्शल ने जहां मांग और पूर्ति के साम्य-बिन्दु के विषय में बताया है वहीं उसने सामान्य मूल्य (Normal Value) और बाजार-मूल्य (Market Value) पर भी प्रकाश डाला है। यह पहले संकेत किया जा चुका है कि **मार्शल** ने "**समय**" के **आधार पर ही बाजारों का वर्गीकरण किया है।** मार्शल बताते हैं कि यों तो मूल्य निश्चित ही मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होंगे परन्तु अल्प काल में (Short Period) में **मांग का प्रभाव पूर्ति की अपेक्षा अधिक पड़ेगा।** क्योंकि अल्पकलीन बाजार में मांग के अनुरूप पूर्ति को घटाया एवं बढ़ाया नहीं जा सकेगा। ठीक इसके विपरीत दीर्घकालीन बाजार में पूर्ति को एक बड़ी सीमा तक बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पूर्ति पक्ष दीर्घकालीन बाजार में मांग पक्ष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मार्शल की दृष्टि में **अल्प समय में बाजार मूल्य** (Market Value) और **दीर्घकाल में सामान्य मूल्य** (Normal Value) **निर्धारित होती है। बाजार मूल्य को ही मार्शल ने अस्थाई साम्य** (Temporary Equilibria) **कह कर पुकारा है, क्योंकि यह सदैव बदलता रहता है, परन्तु दूसरी ओर वह सामान्य मूल्य को** (Stable equilibria) **कहकर पुकारता है, क्योंकि वह स्थायी रहता है।** बाजार मूल्य के सम्पर्क को बताते हुए उसने बताया कि बाजार मूल्य की प्रवृत्ति सदैव सामान्य मूल्य के चारों ओर घूमने की होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि **बाजार मूल्य सामान्य मूल्य से कभी थोड़ा अधिक और कभी थोड़ा कम होता रहता है।**

उक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि मार्शल ने परम्परावादी सम्प्रदाय (Classical School) और विषयगत सम्प्रदाय (Subjective School) के विचारों को मिलाकर मूल्य निर्धारण सम्बन्धी विचार में हमें सत्य के अधिक निकट लाकर खड़ा कर दिया है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि **दीर्घकालीन बाजार में जहां सामान्य मूल्य** (Normal Value) **होती है वहां मूल्य निर्धारण उत्पादन लागत** (Cost of Production) **विशेष महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है, क्योंकि प्रायः सामान्य मूल्य उत्पादन लागत के बराबर ही होता है** और दूसरी ओर अल्प समय में **बाजार-मूल्य** (Market Value) क्रेता को वस्तु से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता (Marginal Utility) के आधार पर मोल-भाव द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मार्शल ने अब तक चल रहे विवाद को अधिक वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत किया है।

(IX) योग्यता लगान तथा आभास लगान

सर्वप्रथम मिल ने यह अनुमान किया था कि प्रकृति का योगदान केवल भूमि में ही नहीं वरन् श्रम तथा संगठन में भी होता है और इस प्रकार उत्पत्ति के इन साधनों में भी लगान सम्भव है। मार्शल ने श्रम में इस बचत को योग्यता का लगान (Rent of Ability) कहा और निम्न परिभाषा दी है : "वह आय जो कोई आदमी अपनी दुर्लभ और प्राकृतिक योग्यता के कारण अर्जित करता है, योग्यता का लगान है।"

Scanned by PDF Scanner

मार्शल ने अर्थशास्त्र में आभास लगान का समावेश किया है। उनके अनुसार, उत्पादन में विशेष परिस्थितियों में कुछ लाभ या बचत हो सकती है। इसे ही मार्शल ने एक तरह का लगान **आभास लगान** (Quasi-rent) बताया है। उन्होंने लिखा है, "आभास लगान कुल आगम और मौद्रिक व्यय (Prime Cost or Money Cost) का वह अन्तर है जो मांग और पूर्ति के आकस्मिक परिवर्तनों से प्राप्त होता है।" मार्शल के विचार में उत्पत्ति का प्रत्येक साधन जिसकी आपूर्ति अल्पकाल में बेलोचदार होती है, लगान अर्जित कर सकता है। मार्शल ने इसे आभास लगान इसलिए कहा, क्योंकि यह एक अस्थायी आधिक्य है, और अल्पकाल में ही प्राप्त होता है। दीर्घकाल में वस्तु (पूंजीगत) की पूर्ति बढ़ जाने पर वह समाप्त हो जाता है। मार्शल के इस विचार का लाभ बाद में लगान के आधुनिक सिद्धान्त के विकास में मिला।

(X) वितरण के सिद्धान्त

मूल्य के सिद्धान्त के समान ही वितरण को भी मार्शल ने बहुत व्यवस्थित रूप दिया है। वस्तुतः मार्शल के लिए वितरण भी मूल्य के सिद्धान्त का ही एक भाग है।

प्रत्येक समाज में अर्जित धन राष्ट्रीय आय (National Dividend) होता है, जिसे उत्पत्ति के साधनों में मजदूरी, ब्याज तथा वेतन आदि के रूप में बांटा जाता है और बाद में उत्पादक की बचत या लगान बचता है। आय जितनी अधिक होगी, अन्य बातें समान रहने पर सभी साधनों का भाग भी उतना ही अधिक होगा।

मार्शल ने उत्पत्ति के साधन भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन और साहस माने। इन सब साधनों को मिलने वाली राशि क्रमशः लगान, मजदूरी, ब्याज, वेतन और लाभ होती है। लगान को छोड़ अन्य साधनों का मूल्य मांग और पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। मांग सीमान्त उपज पर निर्भर होती है और पूर्ति साधन के निर्माण व्यय द्वारा निश्चित होती है, परन्तु दीर्घकाल में लागत ही प्रधान घटक है। मार्शल का कथन था कि मनुष्य जितना उपभोग करता है उससे अधिक उत्पन्न कर सकता है। इसी कारण वितरण की समस्या भी पैदा होती है कि इस अतिरिक्त धन को किस प्रकार बांटा जाय।

(1) **मजदूरी**—मजदूरी के विषय में मार्शल का कथन है कि सामान्य मजदूरी जीवन स्तर के व्यय के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

मजदूरी के निर्धारण में भी मार्शल ने समन्वयकारी दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने प्रतिष्ठित सिद्धान्त को भी मान्यता दी और सीमान्त उत्पादकता (Marginal Productivity) को भी। उसने इन दोनों को अपनी चतुराई से संयुक्त कर दिया। मजदूरी भी मांग और पूर्ति के साम्य से निर्धारित होती है।

(2) **ब्याज**—ब्याज को मार्शल प्रतीक्षा (Waiting) का पुरस्कार मानते हैं। मार्शल ने कहा कि पूंजी का निर्माता भविष्य की आशा में पूंजी का संचय करता है, अर्थात् प्रतीक्षा करता है। अतः इसी के बदले में उसे ब्याज पाने का अधिकार होता है। मार्शल ने दो प्रकार की ब्याज बताई है। एक सकल ब्याज (Gross Interest) इसमें शुद्ध ब्याज (Net Interest) के अतिरिक्त जोखिम का पुरस्कार तथा प्रबन्ध का पुरस्कार भी सम्मिलित होता है जबकि शुद्ध ब्याज केवल प्रतीक्षा का प्रतिफल होती है।

(3) **लगान**—मार्शल का लगान सिद्धान्त रिकार्डो के सिद्धान्त का ही आधुनिक संस्करण है। हैने ने लिखा है कि "मार्शल का भूमि के लगान का सिद्धान्त रिकार्डो पर आधारित है। यद्यपि उन्होंने मिल के 'वैकल्पिक प्रयोग' (Alternative Use) वाले विचार को स्वीकार किया है, परन्तु उन्होंने लगान का अधिक विस्तृत प्रयोग किया और आभास लगान (Quasi Rent) से उसे भिन्न बताया है, जोकि उत्पत्ति के भौतिक साधनों के प्रयोग से होने वाली प्राकृतिक सुविधा से उत्पन्न होता।" मार्शल के अनुसार भी लगान एक बचत है जो सब साधनों का अंश देने के बाद बचती है।

(4) **लाभ**—मार्शल का लाभ सम्बन्धी विचार अत्यन्त अस्पष्ट है। एक स्थान पर वे साहसी को पूंजीपति मानते हैं और दूसरे स्थान पर लाभ को प्रबन्ध का पुरस्कार कहते हैं, परन्तु लाभ के लिए उन्होंने मांग और पूर्ति के ही यन्त्र का प्रयोग किया है। साहसी की मांग और पूर्ति लाभ की मात्रा को निर्धारित करती है। वस्तुतः साहसी के कार्य के विषय में ही मार्शल का कोई निश्चित मत नहीं है।

मार्शल ने लगान और लाभ के अन्तर को सही नहीं समझा। उनके आभास लगान (Quasi Rent) के विचारों ने उलझन बढ़ायी है, कम नहीं की। वस्तुतः बचत (Surplus) के विषय में मार्शल बहुत उलझन में पड़े हैं। उपभोक्ता की बचत, लगान, आभास लगान तथा लाभ आदि का अन्तर बिना स्पष्ट हुए इनसे सम्बन्धित कोई सिद्धान्त निश्चित नहीं हो सकता।

Scanned by PDF Scanner

(XI) अन्य विचार

मार्शल ने सभी सिद्धान्तों पर कुछ न कुछ कहा है, परन्तु विस्तार से यहां उसका वर्णन नहीं हो सकता। उन्होंने उपयोग और आवश्यकता का सुन्दर विश्लेषण किया है। आवश्यकता के लक्षण तथा वर्गीकरण आदि का उनको श्रेय है। माल्थस के जनसंख्या के सिद्धान्त को उन्होंने मान्यता दी है। सन् 1923 में उनका ग्रन्थ '*Theory of Money*' प्रकाशित हुआ था जिसमें उन्होंने मुद्रा के सिद्धान्तों का सुन्दर विवेचन किया है। मुद्रा मात्रा सिद्धान्त को उन्होंने मांग और पूर्ति के माध्यम से समझाया है और उसमें मुद्रा के वेग (Rapidity of Circulation or Velocity) का महत्व बताया है। इसी प्रकार क्रय-शक्ति समता सिद्धान्त (Purchasing Power Parity Theory) का भी उनका अपना वर्णन है।

उत्पादन के नियमों का उन्होंने पहली बार वैज्ञानिक वर्णन किया, जो त्रुटिपूर्ण होते हुए भी आधुनिक सिद्धान्त का आधार बना है। उनके अनुसार उत्पत्ति के निम्न तीन नियम हैं : (1) **उत्पत्ति वृद्धि का नियम** (Law of Increasing Returns), जब सीमान्त उत्पादन (Marginal Output) बढ़ रहा हो, (2) **उत्पत्ति समता का नियम** (Law of Constant Returns), जब सीमान्त उत्पादन समान हो, एवं (3) **उत्पत्ति ह्रास का नियम** (Law of Diminishing Returns), जब सीमान्त उत्पादन घट रहा हो।

परन्तु कठिनाई यह है कि प्राकृतिक नियमों में विरोधाभास नहीं होना चाहिए। अर्थशास्त्र के यह परस्पर विरोधी नियम आजकल एक ही नियम (Law of Variable Proportion) के तीन चरण (Stages) माने जाते हैं और यह ठीक भी है। दूसरा आधुनिक संशोधन यह है कि औसत उपज (Average Output) के आधार पर उत्पादन का घटना और बढ़ना माना जाता है अर्थात् जिस बिन्दु पर सीमान्त उपज और औसत उपज बराबर होते हैं वहां तक उत्पादन बढ़ रहा है ऐसा कहते हैं और वहां से उत्पादन का घटना माना जाता है।

मार्शल का मूल्यांकन

अर्थशास्त्र के इतिहास में मार्शल का स्थान बहुत ऊंचा है और उनकी गणना एडम स्मिथ, माल्थस तथा रिकार्डो आदि की परम्परा में की जाती है।

(1) **समन्वयवादी**—यह उनके अर्थशास्त्र का मूल आधार है। मार्शल के पास आकर विभिन्न विचार विभिन्न न रहकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं। इस दृष्टिकोण को हम सर्वत्र पाते हैं। अर्थशास्त्र उनके लिए शुद्ध विज्ञान भी है, नीतिशास्त्र भी और कला भी मूल्य का निर्धारण लागत से भी होता है, सीमान्त उपयोगिता तथा उत्पादकता से भी, परन्तु समन्वय में पूर्णता होते हुए भी गतिहीनता का खतरा उत्पन्न हो जाता है। समन्वय मार्ग नहीं, चौराहा है। अर्थशास्त्र हो या कोई अन्य शास्त्र, उसे नवीन दिशाएं खोजनी ही पड़ती हैं और इसके लिए परम्परा को छोड़ना आवश्यक होता है। मार्शल में अर्थशास्त्र की गति की कमी है। इसी कारण उनके विचारों को रूढ़िवादी (Conservative) कहा गया है।

(2) **मर्यादा निर्धारण**—मार्शल का दूसरा महान् कार्य अर्थशास्त्र और उससे सम्बन्धित शब्दों की मर्यादा और सीमा निर्धारण करना था। उन्होंने परिभाषाएं, वर्गीकरण तथा विभाजन आदि देकर अर्थशास्त्र को एक स्थिरता प्रदान की और इस प्रकार विज्ञान की नींव को सशक्त किया। निश्चय ही वे मर्यादाएं अब अनावश्यक हो गयी हैं, परन्तु उनके समय में उनका उपयोग था, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। अर्थशास्त्र को चैपमैन के अनुसार उन्होंने प्रथम बार एक संगठित एवं व्यवस्थित इकाई का रूप दिया।

(3) **आदर्शवाद**—मार्शल एक वैज्ञानिक होते हुए भी आदर्शवादी विचारक थे। मिल एवं बेंथम के आदर्शों से वे प्रभावित थे और स्वयं उनकी पृष्ठभूमि, नीतिशास्त्र और दर्शन से अनुप्राणित थी। अर्थशास्त्र जैसे भौतिक विषय में भी वे मानव कल्याण की भावना से ओत-प्रोत थे। अर्थ उनके लिए मानव कल्याण का साधन था, स्वयं अपने में साध्य नहीं था, परन्तु साथ ही वह यह भी मानते थे कि बिना आर्थिक कल्याण के मनुष्य की मानसिक तथा नैतिक उन्नति सम्भव नहीं है। 'मनुष्य और धन' उनके चिन्तन के सदा ही दो आधार रहे हैं।

(4) **मौलिक योगदान**—जहां तक मौलिक विचारों का प्रश्न है, मार्शल ने उपभोक्ताधिक्य, आभास लगान, मूल्य में समय तत्व, परिभाषा तथा प्रतिनिधि फर्म इत्यादि कई विचार दिये, परन्तु आज उनमें से अधिकांश विचारों का रूप काफी बदला जा चुका है। मार्शल ने प्रतिष्ठित सम्प्रदाय की न केवल पुनर्स्थापना की बल्कि अपने अनेक मौलिक विचार प्रस्तुत करके आर्थिक जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Scanned by PDF Scanner

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मार्शल अपने युग के सबसे महान् अर्थशास्त्री क्यों माने जाते हैं? उनके आर्थिक योगदान के प्रकाश में समझाइए।
2. मूल्य तथा वितरण के सिद्धान्तों पर मार्शल के विचारों की प्रधान बातें बताइए।
3. मूल्य निर्धारण में समय तत्व के महत्व को समझाइए।
4. आर्थिक विचारों के क्षेत्र में मार्शल के योगदान की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
5. मार्शल के आर्थिक विचारों का आर्थिक विचारों के इतिहास में क्या योगदान है?
6. मार्शल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मार्शल के मूल्य निर्धारण सम्बन्धी विचार को बताइए।
2. मार्शल के वितरण सम्बन्धी विचार पर प्रकाश डालिए।
3. आभास लगान की धारणा को स्पष्ट कीजिए।
4. मार्शल का उपभोक्ता की बचत सम्बन्धी विचार क्या है?
5. मार्शल की मांग की लोच की धारणा को समझाइए।
6. मार्शल के प्रतिनिधि फर्म की धारणा को स्पष्ट कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए :

1. 1890 में प्रकाशित पुस्तक '*Principles of Economics*' अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के लेखक कौन थे?
   (A) मार्शल (B) एडम स्मिथ
   (C) रॉबिन्स (D) रिकार्डो
2. निम्नलिखित में से किस अर्थशास्त्री ने अर्थशास्त्र में धन की अपेक्षा मनुष्य के अध्ययन को महत्व प्रदान किया है?
   (A) एडम स्मिथ (B) पीगू
   (C) मार्शल (D) इनमें से कोई नहीं
3. अर्थशास्त्र में मांग की मूल्य सापेक्षता का विचार सर्वप्रथम किसने प्रस्तुत किया ?
   (A) मार्शल (B) रॉबिन्स
   (C) सैम्युल्सन (D) जॉन रॉबिन्सन
4. मूल्य के सम्बन्ध में मार्शल का विचार था :
   (A) अल्पकाल में बाजार मूल्य तथा दीर्घकाल में सामान्य मूल्य निर्धारित होता है।
   (B) मूल्य निर्धारण में मांग एवं पूर्ति दोनों पक्ष महत्वपूर्ण हैं।
   (C) दीर्घकाल में पूर्ति पक्ष तथा अल्पकाल में मांग पक्ष अधिक प्रभावी होता है।
   (D) उपर्युक्त सभी
5. आभास लगान के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
   (A) इसका प्रतिपादन मार्शल ने किया।
   (B) यह एक अल्पकालीन अस्थायी आधिक्य है।
   (C) यह कुल आगम तथा कुल परिवर्तनशील लागतों का अंतर होता है।
   (D) उपर्युक्त सभी
6. ब्याज प्रतीक्षा का पुरस्कार है। यह कथन किसका है?
   (A) मार्शल का (B) सीनियर का
   (C) कीन्स का (D) रिकार्डो का

[उत्तर : 1. (A), 2. (C), 3. (A), 4. (D), 5. (D), 6. (A)]

Scanned by PDF Scanner